

समाचार को अधिक स्पष्ट और ग्राह्य बनाने के लिए आवश्यकता से अधिक लंबा करना।

**विस्तारना** स.क्रि. (तत्.) 1. विस्तार करना, फैलाना 2. किसी वस्तु में कुछ नया जोड़ना 3. वृद्धि करना, बढ़ाना 4. विवरण के साथ बताने का कार्य।

**विस्तारवाद** पुं. (तत्.) यह सिद्धांत कि राज्य को अपनी भौगोलिक सीमाओं और अपने अधिकार क्षेत्र का निरंतर विस्तार करते रहना चाहिए भले ही इससे दूसरों के हित अथवा राज्यों का अहित होता हो, विस्तार करने की नीति।

**विस्तारित** वि. (तत्.) जिसका विस्तार किया गया हो या हुआ हो, जिसका क्षेत्र, सीमा, कार्यक्षेत्र, अर्थ आदि को बढ़ाया गया हो।

**विस्तीर्ण** वि. (तत्.) 1. दूर तक फैला हुआ, विस्तृत 2. लंबा-चौड़ा, विशाल 3. अत्यधिक।

**विस्तृत** वि. (तत्.) 1. जिसका विस्तार अत्यधिक हो, विस्तार-युक्त 2. व्याप्त, फैला हुआ 3. विशाल, बहुत बड़ा 4. यथेष्ट विवरण वाला उदा. 'सिंधु सा विस्तृत और अथाह एक निर्वासित का उत्साह' -प्रसाद

**विस्तृति** स्त्री. (तत्.) 1. फैलाव, विस्तार 2. व्याप्ति 3. लंबाई-चौड़ाई 4. ऊँचाई या गहराई 5. वृत्त या व्यास।

**विस्थानिक** वि. (तत्.) जो स्थानीय न हो, बाहरी प्राणि. परस्पर भिन्न भौगोलिक वितरण-क्षेत्र वाले जैसे-विस्थानिक जातियाँ।

**विस्थापन** पुं. (तत्.) किसी व्यक्ति, समाज या समूह को उसके मूल निवास स्थान से बलपूर्वक हटाने का कार्य, अपने स्थान से उखड़ जाना या हटा दिया जाना उदा. कश्मीरी-पंडितों का विस्थापन।

**विस्थापनाभास** पुं. (तत्.) भौतिक रूप से विस्थापन न होकर उसका आभास मात्र होना भौति. किसी दृश्य वस्तु को दो भिन्न स्थानों से देखने पर उस वस्तु का अपने स्थान से कुछ हट कर दिखाई देना, विग्भेद।

**विस्थापित** वि. (तत्.) 1. जिसे अपने स्थान से हटा दिया गया हो 2. वह (व्यक्ति या समूह) जिसे अपने मूल स्थान से बलपूर्वक हटा दिया गया हो, उद्वासित।

**विस्थापित स्पर्शिता** स्त्री. (तत्.) मनो.वि. सामान्यतः त्वचा के जिस स्थान से स्पर्शानुभूति होनी चाहिए, उससे इतर स्थान पर स्पर्शानुभूति।

**विस्पंद** पुं. (तत्.) भौ. ध्वनि की प्रबलता में नियमित घट-बढ़ जो लगभग समान तारता या आवृत्ति वाली ध्वनियों को एक साथ सुनने से उत्पन्न होती है। beat

**विस्पष्ट** वि. (तत्.) 1. पूर्णरूपेण स्पष्ट, सुस्पष्ट 2. प्रत्यक्ष 3. प्रकट।

**विस्फार** पुं. (तत्.) 1. कंपन 2. स्फूर्ति 3. धनुष की टंकार 4. विकास, विस्तार चिकि. नलिका या अवयव का फैलाव।

**विस्फारक** पुं. (तत्.) एक विशेष प्रकार का सन्निपात रोग जिसमें रोगी को साँती, मूर्छा, मोह और कंपन होता है।

**विस्फारण** पुं. (तत्.) 1. किसी चीज को खोलने अथवा फैलाने की क्रिया 2. पक्षियों का पंख पसारना 3. धनुष की प्रत्यंचा खींचना 4. फैलाना।

**विस्फारित** वि. (तत्.) 1. कंपित, थरथराता हुआ 2. खेंचा हुआ, ताना हुआ 3. प्रदर्शित, दिखलाया हुआ 4. स्फूर्ति युक्त।

**विस्फीति** स्त्री. (तत्.) वृद्धि, आधिक्य, बाढ़ पर रोक, स्फीति की समाप्ति।

**विस्फुरण** पुं. (तत्.) 1. कंपन, थरथराहट 2. (बिजली आदि की) कौंध, चमक।

**विस्फुरित** वि. (तत्.) 1. कंपित, चंचल 2. सूजा हुआ, फैला हुआ।

**विस्फुलिंग** पुं. (तत्.) 1. चिनगारी, अग्निकण 2. एक प्रकार का विष।

**विस्फूर्जन** पुं. (तत्.) 1. स्फुटन, बढ़ना या फैलना 2. गर्जन, दहाड़ 3. बादलों की गड़गड़ाहट 4. लहरों का उत्थान।